राष्ट्रोपनिषत्

रचयिता
आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कार
(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्री
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता
महामण्डलेश्वरः स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरी
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थानम्, जयपुरम्

आरोग्यं काम्यते तर्हि, सर्वथा शुद्ध-चेतसा ।
परेश इव सेव्यौ स्तः, चिकित्सकस्तथौषधम् ॥७६॥

आरोग्य की यदि कामना की जाती है, तो सब प्रकार से शुद्धचित्त हो कर परमात्मा की तरह चिकित्सक और उसके द्वारा बताये गये औषध की सेवा करनी चाहिये ।

If the wish of health should be fulfilled, then the medicine should be taken as prescribed by the doctor whose mind is pure like Paramatmas'/Gods'.

आशा चेन्न मनुष्ये स्याद्, दीर्घायुस्तस्य किं भवेत् ?।
निराशस्तु सजीवोऽपि, मृत एवेति मन्यताम् ॥७७॥

यदि मनुष्य में आशा नहीं हो, तो क्या वह दीर्घायु होगा ? निराश बना हुआ तो सजीव होता हुआ भी मृतक ही बना रहता है।

Can one live long without hope? The hopeless one is dead although living.

आश्वासन-प्रदातारो, मिलन्ति बहवो जनाः ।
विरला एव किन्त्वेषु, स्वाश्वासन प्रपूरकाः ॥७८॥

आश्वासन देने वाले तो बहुत से लोग मिल जाते हैं, परन्तु उनमें अपने आश्वासन को पूरा करने वाले विरले ही होते हैं ।

There are many people that give assurances, but the rare ones are those who fulfil them.